सत्ता के आधार (Bases of Authority) – सत्ता एक ऐसा स्वतन्त्र परिवर्त्य है जिसका शक्ति, प्रभाव, आदि से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सत्ता के अनेक स्रोत एवं आधार होते हैं। सत्ता का मूल आधार तो औचित्यपूर्णता ही है, क्योंकि सत्ता के आदेशों का पालन सत्ताधारी और अधीनस्थ के बीच मूल्यों की समानता के आधार पर किया जाता है। इसके अतिरिक्त विश्वास, विचारों की एकरूपता, विभिन्न दण्ड विधान, अधीनस्थों की प्रकृति तथा पर्यावरणात्मक दबाव, आदि भी सत्ता के आधार रूप में कार्य करते हैं। पर्यावरणात्मक दबाव आन्तरिक और बाहरी, दोनों ही रूपों में होते हैं। राज व्यवस्थाओं में आन्तरिक दबाव आन्तरिक राजनीतिक संरचनाओं जैसे, संविधान, प्रशासनिक संगठन, पदानुक्रम में आयोजित विभिन्न पदों तथा उन पदाधिकारियों का अधिकार तथा शक्तियों के रूप में होते हैं। इसके अतिरिक्त सत्ताधारी की कार्यकुशलता और वैयक्तिक गुण भी सत्ता के आधार रूप में कार्य करते हैं। अपने राज्य का भली-भाँति अस्तित्व बनाये रखने की इच्छा, बाहरी दबाव के रूप में सत्ता के आधार का कार्य करती है। सत्ता को स्वीकार करने के लिए अधीनस्थ के पास एक 'तटस्थता का क्षेत्र' होता है, जिसके अन्तर्गत आने वाले मामलों में वह सत्ता के आदेशों को आँख मींचकर स्वीकार करता है। स्वीकृति का यह क्षेत्र सीमित होता है तथा घटता-बढ़ता रहता है। सामान्यतया अधीनस्थ की यह प्रवृत्ति रहती है कि वह प्रत्येक विषय में अधिकारी के आदेशों का पालन करे, क्योंकि ऐसा करने से वह उत्तरदायित्व से बच जाता है। अधीनस्थ की दृष्टि से आवश्यक है कि आदेश समस्त संगठन के लिए हितकारी हों तथा उसके व्यक्तिगत हित में भी हो। वह पुरस्कार, प्रशंसा, लालच या दण्ड के भय से भी आदेशों का पालन कर सकता है।

Avinash

जब सत्ताधारी में कोई सत्ता के अलावा, नेतृत्व तथा अन्य व्यक्तिगत गुण हों तब अधीनस्थ के लिए आदेशों का पालन स्वाभाविक हो जाता है। सत्ता की कुशलता उस समय सर्वाधिक हो जाती है जबकि सत्ताधारी और अधीनस्थों के बीच मूल्यों की समानता स्थापित हो जाती है। सत्ता की स्वीकृति का यह क्षेत्र असीमित नहीं होता और न ही अपरिवर्तित रहता है। सत्ताधारी की स्थिति, सत्ताधारी और अधीनस्थ के बीच सम्बन्धों की स्थिति और अन्य तत्वों के आधार पर इसमें कमी और वृद्धि होती रहती है।